शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofek;k dk lokfekd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २ : नई दिल्ली : १५-२१ अप्रेल २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार कर रहे हैं। पूज्यप्रवर १४ अप्रेल को सिवांची-मालाणी क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। २२ अप्रेल को बालोतरा और ६ जून को पचपदरा पधारेंगे। २४ अप्रेल को अक्षयतृतीया, ३० अप्रेल को आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव, १ मई को तृतीय पदाभिषेक समारोह एवं ५ मई को आचार्यप्रवर का दीक्षा दिवस समारोह समायोजित होगा।

ije J); vkpk;ioj tlky dh vkj

fHk{k vfHkfu"Øe.k fnol dk vk;ktu

१ अप्रेल, अभयधाम (जैतसिंहजी की छतरी स्थल) में रात्रि प्रवास के बाद सूर्योदय के आसपास आचार्यप्रवर पुनः तेरापंथ भवन में पधारे। पूज्यवर ने गांव के अवशिष्ट घरों का स्पर्श किया। चैत्र शुक्ला नवमी लोक जीवन में रामनवमी के रूप में मनाई जाती है। तेरापंथ के लिए आज का दिन इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि संत भीखणजी ने आज के दिन ही विशिष्ट संकल्प के साथ इसी बगड़ीनगर के स्थानक से अभिनिष्क्रमण किया था।

नदी क्षेत्र में निर्मित भिक्षु समवसरण में आयोजित कार्यक्रम में सुश्री खुशबू बरड़िया के वक्तव्य के बाद श्री संदीप बरड़िया ने गीत प्रस्तुत किया। समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। छापर सेवाकेन्द्र में चाकरी संपन्न कर आज शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्दजी एवं मुनि सुमतिकुमारजी ने आचार्यवर के दर्शन किए। नचिकेता मुनि आदित्यकुमारजी, मुनि देवार्यकुमारजी एवं मुनि सुमतिकुमारजी ने गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'जैनदर्शन के अनुसार विश्व व्यवस्था की त्रिपदी है--उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य। मोक्ष की त्रिपदी है--ज्ञान, दर्शन और चारित्र। हिन्दू धर्म की त्रिपदी है--ब्रह्मा, विष्णु व महेश। इसी प्रकार तेरापंथ की त्रिपदी है--आचार क्रान्ति, विचार क्रान्ति और अनुशासन क्रान्ति। आचार्य भिक्षु का जीवन कष्टों की कहानी है। कष्टों और कठिनाइयों के उस दौर में उनकी शान्ति, क्षमा और धृति उल्लेखनीय थी। उनमें कभी भी श्लथता और निराशा के भाव उद्भूत नहीं हुए। सुविधावाद उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं था। वे हमारे आराध्य हैं और आज के दिन हम उन्हें विशेष श्रद्धा के साथ नमन करते हैं।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे। भगवान महावीर की वाणी के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। समर्पित व्यक्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाई स्वतः निरस्त हो जाती है और पथ स्वतः प्रशस्त होता चला जाता है, क्योंकि समर्पण स्वयं में एक सुलझाव है। आचार्य भिक्षु नें संघ खड़ा करने के लिए नहीं, सत्य-मार्ग का राही बनने के लिए अभिनिष्क्रमण किया। उनके द्वारा की गई वैचारिक क्रान्ति के फलस्वरूप जो संघ बना, उसका समर्पण भी बेजोड़ रहा, तभी वह संघ हर झंझावात को झेलने में समर्थ बना।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'नवरात्र का आज अन्तिम दिन है। यह अवसर शक्ति संवर्द्धन का है। जिस महापुरुष ने आज के दिन अभिनिष्क्रमण किया, वह शक्ति का महापुंज था, अन्यथा पृथक मार्ग लेने से पहले कई बार सोचना पड़ता। आचार्य भिक्षु शक्ति के मूर्त्तरूप

थे। साधना मार्ग में आई कठिनाइयों को उन्होंने समभाव से सहा और दुनिया के सामने एक नया रास्ता प्रस्तुत किया। बंधी-बंधाई लकीर पर आंख मूंदकर चलना उन्हें अभीष्ट नहीं था, इसलिए उन्होंने अध्यात्म पथ की एक नई लकीर खींची और उस पर चले। आज का दिन हमें साधना के मार्ग पर चलते हुए आनेवाली हर कठिनाई से जूझने की प्रेरणा देता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'रामनवमी का दिन मर्यादापुरुषोत्तम राम के साथ जुड़ा हुआ है। लोगों के मन में राम के प्रति अत्यन्त श्रद्धाभाव है। संत भीखणजी ने आज का दिन अभिनिष्क्रमण के लिए चुना। उन्होंने भावुकता या आवेश में अभिनिष्क्रमण का निर्णय नहीं लिया। अभिनिष्क्रमण से पूर्व उन्होंने अपने गुरु के साथ गहन चिंतन-मंथन किया। जब समुचित समाधान नहीं मिला तो उन्होंने अपनी आत्मा की आवाज पर नए मार्ग पर कदम बढ़ाए। आचार्य भिक्षु का संकल्प बल बेजोड़ था। उनके जीवन में साधना मुखरित थी। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम अपनी साधना को पुष्ट बनाएं, पवित्र भावना को विकसित करें। आचार संबंधी छोटी-छोटी बातों में हमारी जागरूकता रहे। छोटी-छोटी बातें आचार को सशक्त बनाती हैं। अहंकार और छलना से बचें, जीवन में पारदृश्यता रहे। संघ में आज्ञा का महत्त्व है, इसलिए गुरु आज्ञा के प्रति सजग रहें।'

सेवा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'ध्यान, मौन, जप की भांति सेवा का महत्त्व भी कम नहीं है। सेवा के प्रति निष्ठा का भाव रहे। मेरी सेवा भले ही थोड़ी कम करें, किन्तु जिनकी सेवा के लिए मैं कहूं, उनकी सेवा निष्ठा से करें। वृद्धों की सेवा करें और उन्हें चित्तसमाधि पहुंचाएं तथा जितना भी संभव हो, स्वावलंबी जीवन जीने का प्रयास करें। आचार्य भिक्षु का जीवन स्वावलंबन का उदाहरण है। अपने अन्तिम सिरियारी चतुर्मास में वे स्वयं गोचरी करते, बाहर पधारते। काम करने से व्यक्ति छोटा नहीं बनता। स्वावलंबी बनकर काम करते रहने की प्रवृत्ति व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाती है।'

स्वाध्याय की प्रेरणा देते हुए आचार्यवर ने भिक्षु साहित्य के तलस्पर्शी अध्ययन का आह्वान किया। बगड़ी क्षेत्र के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'बगड़ीवासियों की भावना थी कि मैं यहां नवमी को अभिनिष्क्रमण दिवस मनाऊं। मेरी भी इच्छा हुई। मुझे संतोष है कि मैंने जो वादा किया, वह पूरा हो गया।' बगड़ी क्षेत्र के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'स्वनामधन्य संत वेणीरामजी स्वामी आचार्य भिक्षु के शिष्यों में एक प्रमुख शिष्य थे। आचार्य महाप्रज्ञ को उनके बाल्यकाल में वैराग्य की प्रेरणा देनेवाले मुनि छबीलजी स्वामी भी यहीं के थे। यहां की साध्वी प्रियंवदाजी व प्रेरणाश्रीजी दिल्ली चतुर्मास हेतु साध्वी विद्यावतीजी के साथ जा रही हैं। वे अपना खूब विकास करें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मुझे प्रसन्नता है कि शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी के दर्शन मुझे प्राप्त हुए। वे छापर में सेवा कार्य संपन्न कर यहां पहुंचे हैं। इनकी साधना और संघ के प्रति भावना, दोनों का अच्छा योग है। ध्यान, मौन के साथ सेवा भी महत्त्वपूर्ण है। मुनि सुमतिकुमारजी गंगाशहर के काम करनेवाले अच्छे युवा संत हैं। मुनि देवार्यकुमारजी को अपेक्षावश मुनिश्री देवराजजी की सेवा में लाडनूं भेज दिया। सुजानगढ़ से भी संतों को भेजा। सबने उनकी अच्छी सेवा की। पांच नचिकेता मुनियों में बीच के मुनि आदित्यकुमारजी की दीक्षा मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी के पास हुई। ये गीत बनाते हैं और गाते भी हैं। खूब आगम स्वाध्याय करें और ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

नागणेचा माताजी मंदिर, गुडा चतराजी व क्षत्रिय श्रीसंघ द्वारा बीस ग्रामव्यापी नशामुक्ति यात्रा निकाली गई। इस क्रम में ग्यारहवें गांव बगड़ी पहुंचने पर तेरापंथ भवन में आचार्यवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में यात्रा संयोजक श्री समुद्रसिंह बावा ने यात्रा के विषय में अवगति दी। श्री दानमल पोरवाल ने साहित्य के द्वारा कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने नशामुक्ति की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए नशे के दुष्परिणामों से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

बगड़ी का त्रिदिवसीय प्रवास बहुत प्रभावी रहा। मूर्तिपूजक व स्थानकवासी समाज के लगभग पचास-पचास घर खुले। मुख्यतः दक्षिण भारत में प्रवासी यहां के १७० तेरापंथी परिवारों में प्रायः सभी घर खुले। परिवारों के सदस्य भी बड़ी संख्या में आए। वैसे यहां मात्र एक घर खुला रहता है। गांव में कई बड़ी हवेलियां हैं।

fl;kV e ikou inki.k

आज मध्याह्न में लगभग ३.३० बजे आचार्यवर ने बगड़ी के तेरापंथ भवन से विहार किया और अभयधाम में पधार कर कुछ क्षण तक ध्यान करने के उपरान्त सियाट की ओर प्रस्थित हुए। कड़ी धूप व तपिश के बीच लगभग साढ़े सात किमी. की यात्रा कर सियाट पहुंचे। कहा जाता है कि अभिनिष्क्रमण के बाद आचार्य भिक्षु भी इसी तरह सियाट पधारे थे। आचार्यवर ने उस इतिहास की आज मानों पुनरावृत्ति कर दी। पूज्यवर का प्रवास जयमल जैन स्थानक में हुआ। सियाट पदार्पण पर बम्बोली परिवार द्वारा निर्मित तेरापंथ भवन का लोकार्पण आचार्यवर के मंगलपाठ श्रवण से हुआ। तेरापंथ भवन में साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास रहा। सामान्यतः एक भी घर खुले नहीं रहने वाले इस क्षेत्र में साठ स्थानकवासी परिवारों में अठारह घर खुले। मुख्यतः बम्बोली और आच्छा परिवार के प्रायः सभी सत्रह घर खुले। रात्रि में चन्द्रप्रभ मन्दिर के पास स्थित चौक में आयोजित कार्यक्रम में जयश्री व नीतू बम्बोली द्वारा गीत प्रस्तुति के बाद श्री प्रेम बम्बोली, श्री महावीर बम्बोली व डूंगर बम्बोली व जयमल संप्रदाय के श्री देवीचन्द सिंघवी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। आचार्यवर के प्रेरक उद्‌बोधन से गांववासी लाभान्वित हुए।

Je.kk e ,d Je.k % egkJe.k

„ viyA प्रातः सियाट से विहार कर राष्ट्रीय राजमार्ग नं.१४ के पास सोजतसिटी में स्थित मरुधर केसरी धाम में पूज्य आचार्यवर का कुछ देर के लिए पधारना हुआ। वहां के मंत्री श्री मघराज धोका आदि कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर का स्वागत किया। सोजतसिटी में एक तेरापंथी सहित लगभग एक सौ पचास स्थानकवासी जैन परिवार रहते हैं। पूज्यप्रवर मरुधर केसरी धाम से लगभग १ किमी. आगे पधारे। वहां सैकड़ों लोगों ने शहर में पधारने का भावपूर्ण अनुरोध किया। आज का विहार प्रलंब होने से यह संभव नहीं हो पा रहा था। इसलिए उन्हें निषेध कर आचार्यवर आगे बढ़ने लगे। किन्तु लोग सड़क पर लेट गए। उन्हें समझा कर खड़ा किया गया, किन्तु वे सिटी में गुरुदेव के पदार्पण के लिए बार-बार आग्रह कर रहे थे। पूज्यप्रवर उन्हें मंगलपाठ सुनाकर विहार मार्ग पर आगे बढ़ गए। लोग भी अपने-अपने आवास स्थल की ओर अभिमुख हो गए। आठ-दस कदम आगे बढ़ने के बाद आचार्यप्रवर सहसा सोजतसिटी की ओर मुड़ गए। श्रद्धालुओं ने जब आचार्यवर को अपनी ओर आते देखा तो उनकी प्रसन्नता का पार नहीं रहा। वे उल्लसित होकर नारे लगाने लगे--'श्रमणों में एक श्रमण : महाश्रमण महाश्रमण', 'महाश्रमण का त्याग है : सोजत का सोभाग है', जब तक सूरज चांद रहेगा : महाश्रमण का नाम रहेगा'। शहर के ओसवाल न्याती नोहरे में पधार कर आचार्यवर ने मंगलपाठ सुनाया। लगभग दो किमी. की अतिरिक्त यात्रा के पश्चात् पूज्यवर पुनः विहार मार्ग पर पधारे। मार्ग में श्री बनताराम राठौड़ हाथ में थाली लिए अपने घर के बाहर सपरिवार खड़ा था। उसकी थाली में कुंकुम का घोल था। उसकी भावना आचार्यवर के कुंकुम से भीगे चरणों से कपड़े पर पगलिया करवाने की थी। आचार्यवर ने मुस्कराते हुए उसे मंगलपाठ सुनाया।

èkhukokl&èkkdMh e ygjkb èkeèotk

पूज्यवर लगभग साढ़े अठारह किमी. का विहार कर करीब १०.४५ बजे धीनावास पधारे। अपनी पारंपरिक वेशभूषा में सैकड़ों गांववासी आचार्यवर के स्वागत में दूर तक सामने आए। एक व्यवस्थित जुलूस के साथ पूज्यवर राजकीय माध्यमिक विद्यालय पहुंचे। वहां आयोजित कार्यक्रम में श्री ललित कांकलिया,

कर्मणा जैन श्री देवीलाल बोराणा, श्री मांगीलाल भरड, सरपंच श्री परमेश्वर खत्री एवं पूर्व सरपंच श्री ढगलाराम सीरवी ने आचार्यवर का स्वागत किया। साध्वी दर्शनविभाजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यवर का अभिनंदन किया। स्कूल के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'वृत्ति अच्छी और बुरी दोनों होती है। व्यक्ति के भीतर सत्-असत् संस्कार होते हैं। अठारह पापों में छठा पाप है--क्रोध। गुस्सा करना कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात है सहन करना। वाणी का विवेक और संयम बड़ी बात है। संत वह होता है, जो शान्त होता है। क्षमा के अभ्यास से व प्रेक्षा के प्रयोगों से क्रोध को नियंत्रित किया जा सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मुनि हंसराजजी स्वामी व मुनि प्रसन्नकुमारजी ने यहां चतुर्मास किया। लगता है उनके प्रयत्नों से कर्मणा जैन बनाने का अभियान अच्छा चला। यहां की साध्वी दर्शनविभा अच्छी साध्वी है। वह अपना खूब अच्छा विकास करे।'

सायं लगभग छह बजे तीन किमी. चलकर आचार्यवर धीनावास से धाकड़ी पहुंचे। आज दोनों समय का कुल विहार लगभग बीस किमी. हो गया। दोनों गांवों के कर्मणा जैन व अन्य गांववासी बड़ी संख्या में धीनावास से विहार के समय सहयात्री बने। धाकड़ी गांव के लोग अपनी वेशभूषा में बहुत दूर तक अगवानी में पहुंचे। गांववासियों की जबर्दस्त उपस्थिति देखकर यह स्पष्ट आभास हो रहा था--'ए बापजी वाणियां का नहीं, हैंग जणा का है।' गांवों के लोगों की अच्छी चहल-पहल रही। सबमें अपूर्व उल्लास था। धाकड़ी में आचार्यवर का प्रवास श्री उत्तमचन्द बांठिया परिवार के निवास पर हुआ। पारिवारिक सेवा और प्रेरणा-पाथेय का क्रम भी चला। आचार्यवर का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। धीनावास में कर्मणा जैन परिवार काफी संख्या में हैं। सोजत प्रवासी श्री सोहनलाल कांकलिया इसी गांव के हैं। धाकड़ी का बांठिया परिवार भी श्रद्धालु है।

fo'onhi x#dy e x#oj

… viyA आज प्रातः धाकड़ी के घरों का स्पर्श कर आचार्यवर ने विहार किया। मध्यवर्ती गांव वागावास में भी पूज्यवर ने कई घरों को अपने चरणस्पर्श से पावन किया। कुल लगभग साढ़े ग्यारह किमी. का विहार कर आचार्यवर जाडन गांव से लगभग एक किमी. पूर्व 'ऊं विश्वदीप गुरुकुल आश्रम' परिसर में पधारे। वहां आपका सत्संग भवन में प्रवास हुआ। स्वामी महेश्वरानंदजी द्वारा संचालित इस गुरुकुल में सैकड़ों बच्चों के अध्ययन के साथ-साथ कई विदेशी साधक भी योग साधना करते हैं। छह सौ बीघा भू-भाग में फैले इस परिसर में पर्णकुटीर के पास में निर्मित सत्संग पण्डाल में आयोजित कार्यक्रम में गुरुकुल की पांच कन्याओं ने गुरु वंदना की।

स्वामी महेश्वरानंदजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ की कई पीढ़ियों से हम परिचित हैं। मेरा पहला सम्पर्क सन् १९७३ में सुजानगढ़ में आचार्य तुलसी के साथ हुआ। लाडनूं व अन्य क्षेत्रों में भी तुलसीजी व महाप्रज्ञजी से मैं मिला हूं। हमारी आत्मा व प्रेम में कोई फर्क नहीं है। फर्क है तो कपड़े व उम्र का है। अब समय आ गया है कि हम सब मिलकर काम करें और देश के गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अठारह पापों में सातवें मान पाप की चर्चा करते हुए कहा--'अहंकार की वृत्ति साधना के क्षेत्र में शत्रु होती है। न केवल साधना के क्षेत्र में, अपितु व्यवहार जगत् में भी अहंकार शोभायमान नहीं होता। अहंकार दूसरों पर अधिकार प्रदर्शित करने वाला संस्कार है। अहंकारी स्वयं को अन्य के अधीन रखना नहीं चाहता। अहंकार को विनय नष्ट कर सकता है। विनय में शक्ति होती है। जाति, कुल, बल, लाभ, श्रुत, तप, रूप व सत्ता के अहंकार से बचें।'

जाडन आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'स्वामी महेश्वरानंदजी से लाडनूं, छोटीखाटू, जयपुर,

सिरियारी, दिल्ली आदि कई स्थानों पर मिलना हुआ। आज संत संतों के पाहुने बने हैं। आप तो कई बार आए, जबकि हमारा एक बार आना हुआ है। हम संतों का मूल लक्ष्य साधना से आत्मा को भावित करना है। इसमें हम आगे बढ़ते रहें और यथासंभव जनकल्याण करते रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में सत्संग भवन के लाइब्रेरी हॉल में आचार्यप्रवर और महेश्वरानंदजी के बीच विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ। इस वार्तालाप से पूर्व पाली के प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़े हुए लगभग बीस पत्रकार आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों को आचार्यवर ने समाहित किया।

पूज्य आचार्यवर ने तेरापंथ समाज द्वारा संचालित अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण, जैनविद्या आदि विभिन्न गतिविधियों की अवगति दी तथा आगामी घोषित यात्रा कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। रात्रि में आयोजित कार्यक्रम में कर्नल (रिटायर्ड) ने आश्रम की विभिन्न गतिविधियों की विशद अवगति दी। महामंडलेश्वर श्री जसराज पुरी, जो मूलतः आस्ट्रेलिया के हैं, ने विदेश में स्थित आश्रम के केन्द्रों की जानकारी दी। महेश्वरानंदजी ने अपने अभिभाषण में आचार्यश्री के आश्रम प्रवास पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। डा.शान्ति ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

आचार्यवर ने कहा--'हमने विश्वदीप आश्रम के बारे में सुन रखा था। अभी पाली जाते हुए यहां आना हो गया। आश्रम विशाल है। इसी तरह सबका हृदय भी विशाल बने। आज का दिन मैत्री व सौहार्द का रूप लेकर आया है। हम सब मिलकर लोगों में अहिंसा के संस्कार पुष्ट करते रहें।'

† viyA परमपूज्य आचार्यवर ने प्रातः जाडन से नयागांव की ओर विहार किया। महामंडलेश्वर स्वामी महेश्वरानंदजी ने आचार्यप्रवर के प्रति सादर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पुनः शीघ्र आश्रम में पधारने का अनुरोध किया। आचार्यवर जाडन गांव के भीतर भी पधारे और गांव के तेरापंथी परिवारों के घरों को अपने चरणस्पर्श से पावन किया। लगभग पन्द्रह किमी. का विहार कर पूज्यप्रवर नयागांव स्थित 'रूप रजत विहार' में पधारे। मध्याह्न तक का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य माया का प्रयोग करता है। आत्मा को मलिन बनाने में माया भी एक जिम्मेदार तत्त्व है। यह अधोगति का कारण है। जो मायावी होता है, उसके मित्र भी ज्यादा नहीं बन सकते। गृहस्थ अपने व्यापार-धंधे में धोखाधड़ी न करे, पैसे के प्रति ज्यादा आसक्त न हो। ईमानदारी एक संपत्ति है। उसे सुरक्षित रखने का हर संभव प्रयास करें।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। कांठा यात्रा की संपन्नता पर श्री मूलचन्द नाहर और श्री शान्तिलाल छाजेड़ ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

rirh nigjh e egke?k dh Nk;k ikdj g"kk;k ikyh 'kgj

आज मध्याह्न में लगभग साढ़े तीन बजे आचार्यवर ने पाली शहर की ओर प्रस्थान किया। तपती दोपहरी में चिलचिलाती धूप के बीच आचार्यवर के स्वागत में जैसे जनसैलाब उमड़ पड़ा। हजारों-हजारों लोग पूज्यवर का स्वागत करने को समुत्सुक थे। पूज्यचरण कुछ दूरी तक ही चले थे कि सहसा आकाश में बादल उमड़ आए और अपनी शीतल फुहारों से शान्तिदूत आचार्यवर का मानों अभिषेक करने में तल्लीन हो गए। श्रम-श्वेद और जल की बून्दों से अभिस्नात आचार्यप्रवर समभाव से अपने पथ पर गतिमान थे। कुछ ही क्षणों में आग बरसाता हुआ सूर्य बादलों की ओट में अदृश्य हो गया। मानवता के मसीहा के स्वागत में खड़े लोग चामत्कारिक रूप से बदले हुए मौसम को देख आश्चर्यचकित थे। वे कभी धरती पर गतिमान महामेघ को निहार रहे थे तो कभी आकाश से धरती की ओर प्रवाहमान मेघ को। पालीवासियों की प्रसन्नता का आज कोई पार न था। चारों ओर अलौकिक वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था।

भव्य स्वागत जुलूस और हजारों कण्ठों से गुंजित हो रहे जयनाद श्रद्धालुओं के उल्लास को अभिव्यक्ति दे रहे थे। सड़क के दोनों ओर खड़े हजारों व्यक्ति अहिंसा यात्रा के महापथिक को उत्सुकता के साथ निहार रहे थे और अपनी सादर श्रद्धाप्रणति अर्पित कर रहे थे। श्री अमरचन्द गादिया परिवार द्वारा निर्मीयमाण अहिंसा द्वार के परिपार्श्व में पूज्यवर ने मंगलपाठ का उच्चारण किया।

स्थानीय विधायक श्री ज्ञानचन्द पारख, जिला कलेक्टर श्री नीरज के.पवन, नगर परिषद सभापति श्री केवलचन्द गोलेच्छा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रसन्नकुमार खमेसरा आदि गणमान्य व्यक्तियों तथा विभिन्न समाजों द्वारा पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया गया। बांगड़ कॉलेज के परिपार्श्व से प्रारंभ हुआ विशाल स्वागत जुलूस अहिंसा द्वार, लोढ़ा स्कूल, सूरजपोल और कमला मार्केट होता हुआ वीर दुर्गादास नगर पहुंचा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ज्ञानशाला द्वारा प्रस्तुत पाली के इतिहास से संबद्ध झांकियों (आचार्य भिक्षु द्वारा रात्रि जागरण कर श्रावकों को समझाना) तथा (बालमुनि जीत की स्थिरता) का अवलोकन किया। प्रवास स्थल पर पधारने से पूर्व आचार्यवर अहिंसा समवसरण में पधारे और जुलूस में सम्मिलित हजारों लोगों को मंगलपाठ सुनाया। ५.०५ किमी. विहार के उपरान्त आचार्यप्रवर प्रवास हेतु श्री महावीर भैरूंलाल संकलेचा परिवार के निवास पर पधारे। पूरा संकलेचा परिवार आज अत्यधिक आह्लाद की अनुभूति कर रहा था। घर में प्रवेश के साथ ही परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यवर का आस्थासिक्त स्वागत किया।

पाली चतुर्मास परिसंपन्न करने वाली शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं), साध्वी चन्द्रकलाजी और पचपदरा चतुर्मास परिसंपन्न करने वाली साध्वी लब्धिश्रीजी आदि साध्वियों ने आज आचार्यवर के दर्शन किए।

ukxfjd vfHkuUnu lekjksg

वीर दुर्गादास नगर के ग्राउण्ड में निर्मित अहिंसा समवसरण में रात्रिकालीन कार्यक्रम नागरिक अभिनंदन समारोह के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल और कन्यामंडल की इक्यावन सदस्याओं ने गीत के माध्यम से आराध्य की अभ्यर्थना की और महिला मंडल ने १०१ तथा कन्यामंडल ने ५१ संकल्पों के द्वारा पूज्यवर को त्यागमयी भेंट समर्पित की। श्री विश्वास कातरेला, श्री प्रमोद भंसाली, तेयुप के मंत्री श्री अनिल भंसाली, तेरापंथ सभा के उपमंत्री श्री बसंत सोनीमंडिया श्रीसंघ के सचिव श्री हुकमीचन्द संचेती आदि ने अपनी भावाभिव्यक्तियां दीं। पाली के गणमान्य महानुभावों ने संपूर्ण शहर की ओर से पूज्यवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

पाली नगर परिषद के सभापति श्री केवलचन्द गोलेच्छा ने अपने अभिभाषण में कहा--'पाली जिले की जनता अत्यन्त सौभाग्यशाली है कि आज आचार्यश्री महाश्रमण के पावन चरण इस धरती पर पड़े। जन्म-जन्मान्तरों के अमिट पुण्य का ही प्रतिफलन है कि आचार्यश्री के चरणों की छत्रछाया में बैठकर आपके उपदेशामृत का पान करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।'

पाली के विधायक श्री ज्ञानचन्द पारख ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'जीवन में कभी इच्छा होती थी कि भगवान के दर्शन हो जाएं। आज आचार्यश्री के दर्शन प्राप्त कर वह इच्छा पूर्ण हो गई। आचार्यश्री के चरणस्पर्श का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसलिए आज के दिन को अपने जीवन का सबसे बड़ा दिन कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भाग्य को बदलने वाले सिद्धपुरुष आज पाली आए हैं और सबने देखा कि स्वयं इन्द्रदेव ने अपने पलक-पांवड़े बिछाकर इस महापुरुष का स्वागत किया। आपका प्रवास पाली के भाग्योदय का कारण बनेगा।'

पाली जिला कलेक्टर श्री नीरज के.पवन ने अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त करते हुए कहा--'पाली

शहर लंबे समय से आचार्यश्री के आगमन का इंतजार कर रहा था। आज आपके पदार्पण से वह इंतजार समाप्त हो गया। मैंने छह साल के अपने प्रशासनिक अनुभव में किसी संत का इतना भव्य स्वागत पहली बार देखा। यदि जनता आपके नशामुक्ति और कन्या भ्रूणहत्यामुक्ति जैसे सन्देशों को हृदयंगम कर लेती है तो यह आपका सच्चा स्वागत होगा और आपके आगमन से उत्पन्न प्रफुल्लता चिरकाल तक बनी रहेगी।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन उद्बोधन में अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की चर्चा के उपरान्त कहा--'पाली एक ऐसा क्षेत्र है, जो महामना आचार्य भिक्षु की कर्मभूमि रहा है। स्वामीजी ने यहां सात चतुर्मास किए। लगभग इक्कीस वर्ष पूर्व परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने भी यहां चतुर्मास किया था। पाली के नागरिकों द्वारा स्वागत कार्यक्रम समायोजित हुआ। मेरा तो मानना है कि संत सभी के होते हैं। उनका उपदेश भी सभी के लिए होता है। यदि वह जीवन में आ जाता है तो व्यक्ति का जीवन अच्छा बन सकता है और संतों के उपदेश की अधिक सार्थकता हो सकती है। पाली के बाजार में नैतिकता की देवी और जनता के व्यवहार में अहिंसा की देवी विराजमान हो जाए तो पाली एक आदर्श शहर बन सकेगा।' कार्यक्रम का संयोजन व्यवस्था समिति के मंत्री श्री डूंगरचन्द चोपड़ा ने किया।

नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम के दौरान तेज वर्षा हुई और उसके साथ ओले भी गिरे, जिससे वातावरण में शीतलता व्याप गई।

mnkjrk l vfHkHkr gvk tu lekt

जाडन में ३ मार्च को श्रीसंघ पाली के प्रमुख व्यक्ति पूज्यवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए और अपनी समस्या निवेदित करते हुए बोले--'गुरुदेव! पाली में महावीर जयंती के अवसर पर प्रतिवर्ष श्रीसंघ द्वारा सकल जैन समाज की एक रैली निकाली जाती है। इस बार आपका प्रवास भी पाली में है। चूंकि आपने अपने जुलूस में हाथी, घोड़े, बैण्ड आदि का निषेध कर रखा है, इसलिए तेरापंथ समाज ने पृथक् जुलूस निकालने का निर्णय किया है। हम चाहते हैं कि जुलूस एक ही हो। इसके लिए हम उसमें हाथी, घोड़े नहीं रखेंगे। बैण्ड तो हमें रखना होगा, किन्तु आप उसी जुलूस में अपनी सन्निधि प्रदान करें और हमें उहापोह की स्थिति से उबारें।'

आचार्यवर ने उनकी समस्या को समाहित करते हुए फरमाया--'हम परंपरानुसार प्रतिवर्ष निकलने वाले जुलूस में किसी तरह का (हाथी, घोड़ा, बैण्ड आदि) निषेध करना नहीं चाहते और हम भी यही चाहते हैं कि जुलूस एक ही हो। इसलिए तेरापंथ समाज का अलग से जुलूस नहीं होगा। इसके लिए हम महावीर जयंती के कार्यक्रम हेतु वीर दुर्गादास नगर से महावीर नगर सुबह जल्दी ही चले जाएंगे, ताकि तेरापंथ समाज भी आपके जुलूस में सम्मिलित हो सकेगा। हमारे जाने का मार्ग भी शहर के भीतर से नहीं, बाहर से रहेगा। इससे आपके जुलूस में किसी प्रकार का विघ्न नहीं होगा।'

पूज्यवर के मुखारविन्द से उदारतापूर्ण निर्णय को सुनकर उपस्थित व्यक्ति आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि आचार्यश्री स्वयं के जुलूस को गौण कर हमारे जुलूस को प्रमुखता देंगे। महावीर के सक्षम प्रतिनिधि का यह निर्णय अन्य जैन समाज में उत्पन्न उहापोह को उपशान्त करने वाला था। सभी व्यक्ति जैन शासन के इस तेजस्वी महासूर्य के प्रति श्रद्धाभिभूत थे। पाली के संपूर्ण जैन समाज में पूज्यवर की यह उदारता चर्चा का विषय बनी रही।

„^ffoh Hkxoku egkohj t;arh dk Hk0; vk;ktu

‡ viyA परमपूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः वीर दुर्गादास नगर से २.०५ किमी. का विहार कर महावीर नगर पधारे। मार्ग में जिला कलेक्टर श्री नीरज के.पवन के अनुरोध पर आचार्यवर उनके आवास पर पधारे और कुछ क्षण विराजकर उन्हें सपरिवार सेवा का अवसर प्रदान किया। महावीर नगर में आचार्यवर

का प्रवास श्री फतहराजजी पटावरी परिवार के निवास पर हुआ। पूज्यवर का यह अनुग्रह संपूर्ण परिवार को धन्यता की अनुभूति कराने वाला था। कार्यक्रम से पूर्व मूर्तिपूजक अचलगच्छ के मुनि सर्वोदयसागरजी आदि मुनिद्वय पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुए और विविध विषयों पर वार्तालाप किया।

आज चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का पावन दिन। अणुव्रत नगर में २६११वीं भगवान महावीर जयंती का भव्य समायोजन। लगभग पन्द्रह हजार लोगों की विशाल उपस्थिति। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्यप्रवर के महामंत्रोच्चार से हुआ। मुनि विजयकुमारजी ने मंगल संगान प्रस्तुत किया। पाली तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीत के द्वारा भगवान महावीर के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त की। साध्वी जिनप्रभाजी एवं साध्वी लब्धिश्रीजी ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'भगवान महावीर अलौकिक पुरुष थे। उनमें सम्यक्त्व की चेतना जागृत थी। वे एक नई राह पर आगे बढ़े। अभय की साधना की, लंबा ध्यान किया और लंबी तपस्याएं कीं। उनके जीवन-दर्शन के द्वारा अहिंसा के मर्म को समझें और उनके द्वारा प्रदत्त छोटे-छोटे सूत्रों को अपना कर अहिंसा और अपरिग्रह की चेतना को परिपुष्ट बनाएं।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'भगवान महावीर ने समता का पावन पथ दिखाया। उनका जन्म उस समय हुआ, जब समाज में जातिवाद का बोलबाला था। उन्होंने सबको धर्म करने का अधिकार दिया। इस मंगलमय दिन पर हम आत्मान्वेषण करें कि उनकी शिक्षाएं हमारे जीवन में हैं या नहीं? जैनत्व को जिए बिना जैनों का अवमूल्यन हो रहा है। इसलिए अपेक्षा है कि सबके जीवन में जैनत्व के संस्कार झलकें।' मूर्तिपूजक मुनि सर्वोदयसागरजी के सहवर्ती मुनि गुणवल्लभजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जन्म लेना सामान्य बात है। किन्तु किसी महापुरुष के साथ जुड़कर कोई दिन विशेष बन जाता है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन भगवान महावीर के जन्म के साथ जुड़कर वैशिष्ट्य को प्राप्त हो गया। ज्ञातपुत्र श्रमण भगवान महावीर लोकोत्तम थे। उन्होंने अहिंसा और समता की साधना की, उत्तम तप तपा, केवलज्ञान को प्राप्त किया और दूसरों के लिए भी आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त किया। वह दिव्य महापुरुष मानों अहिंसा का अवतार था। उनका चिह्न सिंह है, जो उनके प्रबल पराक्रमी होने का संकेत भी माना जा सकता है। महावीर जयंती के प्रति जैन समाज में उत्साह और उमंग है। इस अवसर पर जैन समाज के साधु-साध्वियों में परस्पर सौमनस्य और प्रमोदभाव देखने को मिलता है। यह साम्प्रदायिक सौहार्द का भाव और ज्यादा वृद्धिंगत हो। जैन समाज के लोग खाद्य, पेय आदि का विवेक रखें। नशामुक्त जीवन जीने का प्रयास करें और सत्कार्यों के द्वारा जिन शासन की प्रभावना करते रहें।'

पूज्य आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात् पाली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री भेरचन्द गोगड़ ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। श्रीसंघ द्वारा निकाली गई रैली शहर के विभिन्न मार्गों से होती हुई लगभग साढ़े ग्यारह बजे कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। आज का रात्रिकालीन प्रवास श्री राणमल मेहता परिवार के आवास पर हुआ। यह सौभाग्य प्राप्त कर संपूर्ण परिवार अत्यन्त प्रफुल्लित और आह्लादित था।

xgLi'kuk dk lUnHk e

महावीर जयंती के कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने गृहस्पर्शना के सन्दर्भ में कुछ नियमन करते हुए कहा--'मैं प्रायः घरों-घरों में जाया करता हूं। अब मैंने सोचा है कि इसे कुछ कम करना चाहिए, ताकि ज्यादा कार्य हो सके, समय का अधिक अच्छा नियोजन हो सके तथा हम अपनी साधना में और आगे बढ़ सकें। इस दृष्टि से आज से अनिश्चितकाल के लिए एक प्रयोग प्रारंभ कर रहा हूं। वह यह है कि व्यक्तिगत घरों

में यथासंभव नहीं जाऊंगा। इसके कुछ अपवाद रहेंगे, जैसे--

१. किसी रुग्ण अथवा अक्षम को दर्शन देना हो।

२. किसी के संथारा हो अथवा संथारा पचखाना हो।

३. इक्कीस से अधिक की तपस्या का पारणा हो।

४. दीक्षा आदेश प्राप्त दीक्षार्थी का घर हो।

५. कोई घर ऐतिहासिक स्थल हो, जैसे--आचार्यों का जन्मस्थल, महाप्रयाण स्थल, चातुर्मासिक स्थल आदि।

tkxk eu e Lug

^ viyA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः महावीर नगर से पुनः वीर दुर्गादास नगर के लिए प्रस्थित हुए। मार्ग में कुछ चक्कर लेकर आचार्यप्रवर श्री चांदमल संकलेचा परिवार के निवास पर पधारे। यह वही स्थान है, जहां परम श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञजी ने सन् १९९० का चतुर्मास किया था। मकान का चप्पा-चप्पा मानों अपने भीतर पुनीत इतिहास को समेटे हुए था। आचार्यवर ने विभिन्न ऐतिहासिक स्थानों का अवलोकन करने के पश्चात् एक पद्य की रचना करते हुए कहा--

ikol LFky x#no dk] l[kn pkn th xgA
vkt ogh ij vk x,] tkxk eu e Lug Ï

पूज्यप्रवर यहां से प्रस्थान कर अनेक वृद्ध और रुग्ण व्यक्तियों को दर्शन देते हुए पुनः वीर दुर्गादास नगर स्थित संकलेचा परिवार के निवास स्थल पर पधारे।

,d ugh g foltu vkj vkfFkd vunku

अहिंसा समवसरण में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि महावीरकुमारजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। श्री प्रमोद भंसाली ने काव्य-स्वरों में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) और साध्वी चन्द्रकलाजी आदि साध्वियों ने गीत के माध्यम से आराध्य के चरणों में अपने भाव सुमन अर्पित किए। पाली की समणी अमलप्रज्ञाजी ने पूज्यवर के अभिनंदन में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। बालक तीर्थेश ने अपनी बालसुलभ अभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में लोभ के दुष्परिणामों की चर्चा करते हुए सन्तोष को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी। पूज्यप्रवर ने विसर्जन और अनुदान शब्द की व्याख्या करते हुए कहा--'लोग किसी संस्था में दान अथवा चन्दा देते हैं, यह सामाजिक या लौकिक कार्य है। यह लोक में चलता है और इसे निन्दनीय भी नहीं माना गया। लेकिन यह विसर्जन नहीं, आर्थिक अनुदान है। इसके लिए बोलने, लिखने आदि में 'विसर्जन' शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसे आर्थिक सहयोग अथवा अनुदान कहा जा सकता है। विसर्जन तो शुद्ध त्याग होता है। जैसे किसी ने संकल्प कर लिया कि अमुक समय सीमा के बाद अपने स्वामित्व में इतनी संपत्ति से अधिक नहीं रखूंगा तो यह विसर्जन है, इच्छा परिमाण है। इस तरह विसर्जन और आर्थिक अनुदान एक नहीं है, दोनों में अन्तर है।'

पूज्यप्रवर ने पाली में पहले से प्रवासित साध्वियों के विषय में कहा--'साध्वी भीखांजी हमारे धर्मसंघ की एक वयोवृद्ध, वरिष्ठ और विशिष्ट साध्वी हैं। शासन और शासनपति के प्रति इनका निष्ठाभाव और संघीय संस्कार अनुकरणीय है। इन्होंने वर्षों तक गुरुदेव तुलसी की गोचरी सेवा की है। आमेट मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने इन्हें शासनश्री के रूप में स्वीकार किया है। साध्वी चन्द्रकलाजी भी अग्रणी हैं और इन्हीं के साथ हैं। ये भी एक अच्छी साध्वी हैं। साध्वी लब्धिश्रीजी साध्वी सोनाजी के साथ रही हुई अच्छा

कार्य करने वाली साध्वी हैं। सभी साध्वियां खूब अच्छी साधना और अच्छा कार्य करती रहें। समणी अमलप्रज्ञा को हमने यहां बुला लिया। ये भी खूब अच्छा विकास करती रहें।'

Lokehth! fd;k fcjkT;k gk vB

‰ viyA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः प्रवास स्थल से पाली के बाजार में स्थित उस दुकान पर पधारे, जहां आचार्य भिक्षु ने छह चतुर्मास परिसंपन्न किए थे। ऊपरी मंजिल में स्थित इस दुकान की दुरूह और संकरी सीढ़ियां चढ़ते हुए सहसा पूज्यवर के मुखारविन्द से स्वर निकला--'स्वामीजी ! कियां बिराज्या हो अठै?' दो भागों में विभक्त इस छोटी-सी दुकान में छह चतुर्मास बिता देना प्रबल आत्मबल का ही द्योतक है। वर्तमान में यह दुकान श्री कानमल पोरवाल के स्वामित्व में है। पूज्यवर ने गर्मी से तप्त इस स्थान में कुछ क्षण खड़े होकर इतिहास की अवगति प्राप्त की और एक पद्य की रचना की, जो इस प्रकार है--

vkokl LFky fHk{k dk] ikyh dk ;g LFkkuA
p<uk Hkh n"dj tgk] ogh cuk vkLFkku Ï

पूज्यप्रवर दुकान से प्रस्थान कर गुन्दोचियावास स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। यहां कुछ क्षण आसीन होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। लोगों ने बताया--चतुर्मासकाल के अतिरिक्त आठ महीनों तक यहां सामूहिक सामायिक का उपक्रम चलता है। पूज्यवर ने उपस्थित जनता को पावन पाथेय प्रदान किया। यहां से आचार्यप्रवर मंडिया रोड स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। वर्तमान में चतुर्मास इसी स्थान पर होते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर ने वहां कुछ क्षण तक विराज कर श्रावक समाज को संबोध प्रदान किया और 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। आचार्यवर ने इस भवन के ऊपरी तल का भी अवलोकन किया। ऐतिहासिक दुकान और तेरापंथ भवन के अवलोकनार्थ पधारते हुए आचार्यवर ने अनेक रुग्ण और अक्षम व्यक्तियों को उनके घर पधार कर दर्शन भी दिए। प्रवास स्थल की ओर लौटते हुए आचार्यवर ने 'अणुव्रत द्वार' का भी अवलोकन किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वी आस्थाप्रभाजी, साध्वी सिद्धप्रभाजी, समणी श्रद्धाप्रज्ञाजी और समणी ज्ञानप्रज्ञाजी ने अपनी दीक्षाभूमि पाली में आचार्यवर की अभ्यर्थना में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में वीतरागता के विकास की प्रेरणा प्रदान करते हुए स्वरचित गीत 'साधना ही शान्ति का आधार है' का संगान किया। आचार्यवर का आज का रात्रिकालीन प्रवास श्री माणकचन्द भैरूंलाल संकलेचा के निवास पर रहा। पूरा परिवार इस अनुग्रह को प्राप्त कर कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

ifj'kkèku d fy, gkrk g mykguk

Š viyA प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया। पाली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री भेरचन्द गोगड़ व उनकी टीम ने दायित्व हस्तान्तरण के क्रम में आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति बालोतरा के संयोजक श्री देवराज खींवसरा व पदाधिकारियों को ध्वज हस्तान्तरित किया और बालोतरावासियों ने दायित्व ग्रहण से पूर्व आचार्यवर से मंगलपाठ सुना। श्री रूपचन्दजी सेठिया (रतनगढ़-सूरत) द्वारा लिखित पुस्तक 'सूरत में तेरापंथ : उद्‌भव और विकास' का लोकार्पण हुआ। सूरत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री बालचन्द बेताला, श्री रूपचन्द सेठिया व सूरत के लगभग पचीस वरिष्ठ श्रावकों ने संयुक्त रूप से कृति आचार्यप्रवर को उपहृत की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शिष्य के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु कभी-कभी उलाहना भी देते हैं, कड़ी बात भी कह देते हैं हैं, किन्तु व्यवहार में गुरु के उलाहने को भी प्रशस्त माना

जाए। गुरु के उपालंभ को जो अपने विकास का कारक मानता है, वह महान बनता है। गुरु का उपालंभ परिशोधन के लिए होता है, इसलिए विनयपूर्वक उसे स्वीकार करना चाहिए।' प्रवचन में प्रसंगवश पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों की विनम्रता, सेवानिष्ठा व समर्पण की सराहना की।

उपहृत पुस्तक के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'रूपचन्दजी सेठिया द्वारा आलेखित पुस्तक 'सूरत में तेरापंथ : उद्भव और विकास' से जानकारी मिल सकेगी। रूपचन्दजी उपासक रहे हैं, पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अपनी सेवाएं दी हैं। यह पुस्तक ज्ञानवृद्धि में सहायक बनी तो इनका श्रम सार्थक होगा।' विराटनगर में संथारे में दीक्षित साध्वी अमृतश्रीजी के देवलोक गमन पर आज स्मृति सभा का आयोजन हुआ, जिसमें चार लोगस्स का सामूहिक ध्यान किया गया।

रात्रि में मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ। पूज्य आचार्यवर ने सबको अपने जीवन को धर्म से अनुप्राणित करने की प्रेरणा दी। आचार्यवर के पंचरात्रिक प्रवास में पाली शहर में उत्साह और उल्लास का वातावरण रहा। वीर दुर्गादास नगर में प्रवास के दौरान दर्शनार्थियों का प्रातः से रात्रि तक तांता-सा लगा रहता। विशाल प्रवचन पंडाल खचाखच भरा रहता। पाली ज्ञानशाला का भी मध्याह्न में उल्लेखनीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। पाली में श्रद्धा के लगभग दो सौ पचास परिवार हैं। अन्य जैन समाज के भी सैकड़ों घर हैं। सबने इस प्रवास का पूरा लाभ उठाया। आजका रात्रिकालीन प्रवास श्री संतोषकुमार भैरूंलाल संकलेचा परिवार के निवास पर रहा। परिवार का हर सदस्य इस सौभाग्य को प्राप्त कर अहोभाव की अनुभूति कर रहा था।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ९ अप्रेल को पाली शहर से विहार कर कोठारी फार्म हाउस पधारे। आज का प्रवास यहीं रहा। १० अप्रेल को केरला, ११ अप्रेल को जेतपुरा और १२ अप्रेल को माण्डावास पधारे। इन स्थानों की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

vu'ku e nhf{kr lkèoh verJhth dkyèke dk lkiklr

विराटनगर में साध्वी अमृतश्रीजी का चौविहार संथारे में २९ मार्च को अपराह्न लगभग तीन बजे स्वर्गवास हो गया। गत १९ फरवरी को उनकी संलेखना प्रारंभ हुई। आचार्यवर के निर्देशानुसार साध्वी त्रिशलाकुमारीजी विराटनगर पहुंचीं और २९ फरवरी को उन्हें तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। संथारे के दौरान श्राविका इन्दिरादेवी कुंडलिया के मन में दीक्षा की भावना जागी। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशानुसार वहां प्रवासित साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने ५ मार्च को उन्हें दीक्षा प्रदान की और पुनः संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। दीक्षा के बाद इन्दिरादेवी का नाम साध्वी अमृतश्री रखा गया। उन्होंने ११ मार्च को चौविहार संथारा स्वीकार किया। इस प्रकार दस दिन की संलेखना, ग्यारह दिन के तिविहार व उन्नीस दिन के चौविहार संथारे में उनका देवलोक गमन हुआ। संथारे के दौरान नेपाल के उपप्रधानमंत्री सहित अनेक राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी व विभिन्न वर्गों के हजारों लोगों ने उनके दर्शन किए।

श्रीडूंगरगढ़ के चोरड़िया परिवार की सुपुत्री व कुंडलिया परिवार की बहू इन्दिरादेवी के चार पुत्र व तीन पुत्रियां हैं, सभी संस्कारी हैं। वे गृहस्थ जीवन में प्रतिदिन आठ-दस सामायिक किया करती थीं। 'ॐ भिक्षु' मंत्र के प्रति निष्ठाशील इन्दिरादेवी ने अठारह करोड़ छियासी लाख का जप अनुष्ठान किया था।

पाली में ८ मार्च को आयोजित स्मृति सभा में पूज्य आचार्यवर ने उनके संदर्भ में कहा--'साध्वी अमृतश्रीजी ने विराटनगर में गृहस्थावस्था में तिविहार संथारा स्वीकार किया। संथारे में ही हमारे निर्देश से दीक्षा हुई। वे धर्मसंघ की अन्तरंग परिषद की सदस्या बनीं। संवाद मिला कि उनके संथारे में लोग बड़ी संख्या में आए। ३७८ मांसाहारी व्यक्तियों ने संथारे के दौरान मांसाहार का परिहार रखा। संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। विराटनगर के श्रावक समाज ने अपने दायित्व का निष्ठा से निर्वहन किया।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

mYy[kuh; ekx lok

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ४ अप्रेल को पाली पधारे। इसके साथ ही २६ फरवरी को राणकपुर से प्रारंभ हुई कांठा यात्रा संपन्न हो गई। इस यात्रा में श्रावक समाज ने बहुत निष्ठा से सेवा की। अनेक लोगों ने सपरिवार उपासना का लाभ लिया। पूज्यवर के प्रवास क्षेत्र में एक नगर-सा बस जाता है। दिन भर श्रद्धालुओं का तांता-सा लगा रहता है। यहां एक सप्ताह और उससे अधिक मार्ग सेवा करने वालों का उल्लेख किया जा रहा है--श्री पुखराज परमार (मगरतलाव), देवराज मूलचन्द नाहर (जाणुन्दा), श्री पारसमल गादिया (गुडारामसिंह), श्री बस्तीमल मांगीलाल छाजेड़ (सिरियारी), श्री भीखमचन्द नखत (टमकोर), श्री दीपचन्द नाहर (जाणुन्दा), श्री कन्हैयालाल खटेड़ (लाडनूं), श्री मीठालाल भोगर, श्री पुखराज धोका, श्री प्यारेलाल सिसोदिया, श्री मोतीलाल मेहता (सायरा), श्री जतनलाल सेठिया (सरदारशहर), श्री गुलाबचन्द डागा (बेंगलुरु), श्रीमती उषाबहन (जगराओं), श्रीमती सायरबाई गुन्देचा (नाथद्वारा), आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति जसोल, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति बालोतरा, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा रानी, खिंवाड़ा, बगड़ी, पाली, कंटालिया, गुड़ारामसिंह, अषाढ़ा, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी।

कांठा यात्रा की व्यवस्थाओं में श्री पुखराज परमार, श्री धरमीचन्द लूंकड़, श्री मूलचन्द नाहर, श्री पारसमल गादिया, श्री मांगीलाल छाजेड़, श्री जतनमल सेठिया आदि कार्यकर्ताओं का निष्ठापूर्ण योग रहा।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

३१००/- स्व. सुरेशमल मरलेचा (सुपुत्र श्री प्रतापमल मरलेचा, अंबाजोगई) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरला मरलेचा, डॉ. अनिल-छाया, सुनील-चित्रा (औरंगाबाद), श्रीमती कमला-प्रकाश मरलेचा, श्रीमती विमला-सुरेश चोपड़ा एवं श्रीमती दमयंती-दिलीप गेलड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती हीराबाई कालूरामजी तलेसरा (सेमड़-सूरत) के द्वितीय वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू जयंतीलाल-चंपाबेन, सुपौत्र व पौत्रवधू शशिकान्त-लीलाबेन, मुकेश-अलकाबेन, प्रपौत्र व प्रपौत्री रिषभ, रिधम, प्रेक्षा, रिद्धि, जाह्नवी तलेसरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- वाव पथक द्वारा बारहवें सामूहिक विवाह के नवदम्पतियों को गुरुदर्शन कराने के उपलक्ष्य में रतनबेन कीर्तिलाल मेहता परिवार, मुम्बई-वाव द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. प्रकाश एवं सुश्री आकृति के जन्मदिन के उपलक्ष्य में श्री दिनेश-रमीला, शिल्पा, अवनी, हर्ष मेहता व श्रीमती रतनबेन कीर्तिलाल मेहता परिवार मुम्बई-वाव द्वारा प्रदत्त।

२१००/- नारीरत्न स्व. श्रीमती पुष्पाबेन जे.पारिख (दिल्ली-मुम्बई) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में जया लक्ष्मीचन्द, शैला मयूर, सेहुल मयूर श्रोफ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री भंवरलालजी झाबक (सुपुत्र-स्व. मानमलजी झाबक) की पुण्यस्मृति में श्री मानमल भंवरलाल झाबक परिवार, बीकानेर द्वारा प्रदत्त।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk]

ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641

fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % 14&4&2012

●

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mikè;k; ekx] ub fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr rFkk iou fiVl] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnrA lEiknd % **d'koilkn pronhA**